Rohtas Mahila College, Sasaram. 03-05-21
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology. B.A. Part III
Pr-I.

(Topic - व्यक्तित्व के प्रकार सिद्धान्त)

व्यक्तित्व के प्रकार सिद्धान्त के समर्थकों में हिपोक्रेट्स (~~Hipp~~ Hippocrates), युंग (Yung), क्रेश्मर (Kretscher) शेल्डन (Sheldon) आदि के नाम उल्लेखनीय है। इन विद्वानों ने व्यक्तित्व को कई प्रकारों में विभाजित करके इसके वास्तविक स्वरूप को समझने का प्रयास किया। यह सिद्धान्त इस विश्वास पर आधारित है कि कुछ व्यक्तियों में लगभग एक ही तरह के शीलगुण पाये जाते हैं। दूसरे लोगों में वे उसी समान प्रतिरूप या मात्रा में नहीं पाये जाते हैं। अतः कुछ विशिष्ट शीलगुणों के समूह को ही प्रकार कहते हैं।

शीलगुण वास्तव में व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष हैं और प्रकार इसके बाह्य पक्ष है। प्रकार के रूप में ही शीलगुणों की की अभिव्यक्ति होती है। एक 'प्रकार' के निर्माण में कई शीलगुणों का साथ होता है। अतः व्यक्तित्व रूपी भवन की ईंटें शीलगुण हैं और इस भवन का बाह्य रूप 'प्रकार' है।

हिपोक्रेटिस का वर्गीकरण:- हिपोक्रेटस (400 B.C) ने ~~शारी~~ शारीरिक द्रव्यों के आधार पर व्यक्तित्व का विभाजन चार प्रकारों में किया। इनके अनुसार शरीर की रचना चार प्रकार के द्रवों से हुई है, जिन्हें रक्त (Blood) काला पित (~~Yellow Bile~~ Black Bile), पीला पित (Yellow Bile) तथा कफ कहते हैं। प्रत्येक शरीर में ये चारों द्रव पाये जाते हैं। इनमें से एक ही द्रव प्रधान होते हैं जो व्यक्ति के स्वभाव को निर्धारित करता है। इनके अनुसार जिस व्यक्ति में रक्त द्रव प्रधान होता है, वह आशावादी होता है, वह प्रसन्न तथा खुशमिजाज होता है। जिस व्यक्ति में काला पित की प्रधानता होती है, वह निराशावादी होता है। वह प्रायः उदास तथा खिन्न रहा करता है। जिस व्यक्ति में पीला पित प्रधान होता है, वह चिड़चिड़ा होता है। जिस व्यक्ति में कफ की प्रधानता होती है, वह विरक्त होता है उसमें उदासीनता एवं भावशून्यता के लक्षण पाये जाते हैं। लेकिन कई ~~मनोवैज्ञ~~ मनोवैज्ञानिक ~~इन~~ इनके विचार से सहमत

Scanned with CamScanner

सहमत नहीं है।
(iii) क्रेश्मर का वर्गीकरण - क्रेश्मर ने शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकारों का उल्लेख किया - (A) स्थूलकाय, (B) कृशकाय (C) पुष्टकाय। वे एक जर्मन मनोचिकित्सक थे। उन्होंने मानसिक रोगियों की शारीरिक रचना तथा उनके मानसिक लक्षणों के निरीक्षण के आधार पर दावा किया कि शारीरिक रचना तथा स्वभाव के बीच एक निश्चित सम्बन्ध है। उनका विश्वास था कि एक विशेष शारीरिक बनावट वाले व्यक्ति में कुछ विशेष शीलगुण पाये जाते हैं। इसी विश्वास के आधार पर उन्होंने उक्त तीन व्यक्तित्व प्रकारों का उल्लेख किया।
(A) कृशकाय - इस तरह के लोग लम्बे तथा दुबले पतले शरीर वाले व्यक्ति को कृशकाय कहा जाता। ऐसे व्यक्ति की मांसपेशियाँ अविकसित होती हैं। मांसपेशियों की अक्षमता, शरीर के सभी अंग जैसे- चेहरा, गर्दन, धड़ आदि में देखी जाती है। शरीर का वजन सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम होती है। कंधे तंग होते हैं और छाती लम्बी मगर संकीर्ण एवं पतली होती है। ऐसे लोग चिड़चिड़ा मिजाज के होते हैं। अधिक सक्रिय रहते हैं, नींद कम आती है और दिवास्वप्न अधिक करते हैं।
(B) पुष्टकाय :- इस तरह के लोग सुडौल तथा संतुलित शरीर वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति का कद-काठी औसत कद का होता है। उसका शरीर न तो अधिक लम्बा होता है और न अधिक नाटा, न अधिक दुबला पतला होता है और न अधिक मोटा ताजा। उसकी मांसपेशियाँ सुविकसित होती हैं।
(C) स्थूलकाय :- इस तरह के व्यक्ति मोटे तथा नाटे शरीर वाले होते हैं। उनकी मांसपेशियाँ विकसित होती हैं। शरीर के अंग जैसे- सिर, छाती, तथा पेट अधिक विकसित होते हैं। गर्दन मोटी और छोटी होती है। मेहराबी छाती (vaulted chest) होती है। ऐसे लोग-

शांतिप्रिय तथा खुशमिजाज होते हैं। काम कम करते हैं और ~~बातें अधिक~~ खाते, सोते अधिक। सोने में बहादुर होते हैं।

(iii) शेल्डन का वर्गीकरण :- शेल्डन (Sheldon, 1940, 1942) ने क्रेश्मर की तरह शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व को विभाजित करने का प्रयास किया। इन्होंने क्रेश्मर के वर्गीकरण की आलोचना करते हुए कहा कि यह वर्गीकरण मानसिक विकृत व्यक्तियों के व्यक्तित्व की व्याख्या करने में भले सफल हो, परन्तु सामान्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व की व्याख्या करने में सफल नहीं है। शेल्डन ने व्यक्तित्व को तीन भागों में विभाजित किया है। (A) गोलाकृतिक - मोटे, नाटे तथा गोल शरीर वाले व्यक्ति को गोलाकृत कहा गया। ऐसे लोग खुशमिज खुशमिजाज तथा सामाजिक होते हैं। बातें अधिक हैं, परन्तु काम कम करते हैं।

(B) आयताकृतिक :- संतुलित शारीरिक रचना वाले व्यक्ति को आयताकृतिक की संज्ञा दी गयी। ऐसे लोगों में हड्डियों तथा मांसपेशियों का विकास संतुलित होता है। ऐसे लोग काम करना पसंद करते हैं, कभी कभी आक्रमणकारी होते हैं, तथा दिल खोलकर हँसते हैं।

(C) लम्बाकृतिक - ऐसे लोग लम्बे तथा दुबले पतले शरीर वाले व्यक्ति होते हैं। शरीर कोमल होता है, तथा छाती पतली होती है। ऐसे लोग लज्जालु, संकोचशील तथा चिड़चिड़े मिजाज के होते हैं।

(iv) युंग का वर्गीकरण :- युंग (Yung) ने मानसिक शीलगुणों के आधार पर व्यक्तित्व के निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया है।

(A) अंतर्मुखी (introvert) :- इस तरह के व्यक्ति संकोचशील, लजालु तथा आत्मकेन्द्रित होता है। वह एकांत में रहना अधिक पसंद करता है। उसमें सम्बन्धन आवश्यकता कम होती है। वह रुढ़िवादी होता है। पुराने मूल्यों को अधिक मानता है। उसके चिन्तन में दृढ़ता पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

(B) बहिर्मुखी (extrovert) :- बहिर्मुखी व्यक्ति का स्वभाव अन्तर्मुखी व्यक्ति के विपरीत होता है। उसमें सम्बन्धन आवश्यकता अधिक पाई जाती है। वह दूसरे लोगों से मिलने-जुलने वाला होता है। उसके विचार एवं व्यवहार में लचीलापन अधिक पाई जाती है। वह नये मूल्यों को अधिक मानता है। उसमें यथार्थता अधिक पाई जाती है और आदर्शवाद कम।

Scanned with CamScanner